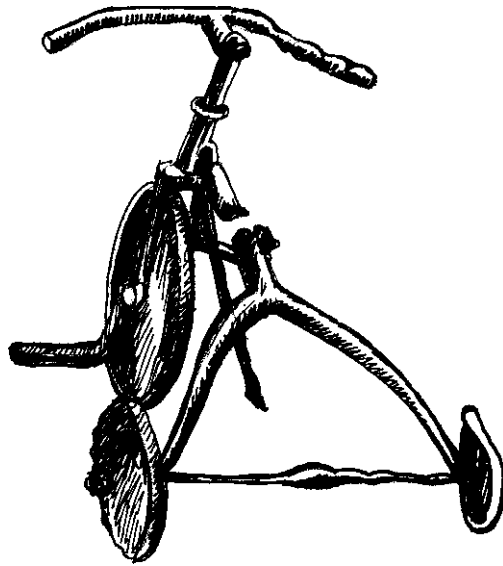


SHIN'S TRICYCLE

TATSUHARU KODAMA

This story will forever, instill hatred for war in the minds of children and young people . War does not kill politicians and generals. The victims of war are innocent children - like three year old Shin. Little Shin was riding his red tricycle when America dropped a bomb on Hiroshima. This story will forever remind you about the horrors of war and inspire you to work for peace.



शिन की तिपहिया साइकिल

तातसुहारू कोडामा

अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

ये एक ऐसी कहानी है जो बच्चों के दिलों में, हमेशा-हमेशा के लिए जंग और लड़ाई के खिलाफ नफरत पैदा करेगी। लड़ाई में बड़े-बड़े नेता और फौज के जनरल नहीं मरते हैं। उसमें मरते हैं शिन जैसे तीन साल के निरीह बच्चे। शिन अपनी तिपहिया साइकिल चला रहा था जब हिरोशिमा पर अमरीका ने एटम-बम फेंका। ये कहानी हमें हमेशा जंग के विनाश की याद दिलाएगी।



Every August I am haunted by the same memory. In my mind I see my son, Shin, riding the red tricycle that he dreamed of getting for his birthday. But this happy picture disappears behind a cloud of smoke and ash. A darkness falls on my heart when I think of the one day in August that brought all our dreams to an end.

Fifty years ago, when Shin was three, our family lived in a small house near a quiet river that flowed through Hiroshima, Japan. Shin had two sisters, Michiko and Yoko. But his best friend was Kimi, the girl who lived next doors. Each day they played house and looked at picture books, especially the one that showed the tricycle that Shin wanted so badly - even though he knew that it was an impossible dream.

हर साल जब अगस्त आती है तो मुझे फिर वही पुरानी यादें सताती हैं। मुझे बार-बार अपने पुत्र शिन का चेहरा याद आता है। वो एक लाल तिपहिया साइकिल चला रहा होता है। उसका सपना था कि यह साइकिल उसे जन्मदिन पर मिले। परंतु जल्द ही खुशी की यह तस्वीर, धुएं और राख के बादलों में छिप जाती है। उस अगस्त के दिन, हमारे सारे सपने चकनाचूर हो गए और सदा के लिए मेरे हृदय पर एक काला बादल छा गया।

पचास साल पहले शिन केवल तीन साल का था। हम जापान के हिरोशिमा शहर में रहते थे। शिन की दो बहनें थीं - मिचिका और योको। परंतु उसकी सबसे प्रिय मित्र थी किमी। वो पड़ोस के घर में रहती थी। दोनों दिन भर लकड़ी के गुटकों से घर बनाते रहते या फिर सचित्र पुस्तकों के पन्ने निहारते - खासकर एक किताब के - जिसमें एक तीन पहियों वाली साइकिल का चित्र बना था। शिन वैसी ही साइकिल चाहता था। उसे पता था कि उसका यह सपना कभी भी पूरा नहीं होगा।



There weren't any tricycles anywhere in Japan! In 1941, Japan had attacked America and many other countries. And after four years of war, bicycles, temple bells, even pots and pans were melted down to build tanks and cannons. There were no new toys anywhere.

But Shin wanted the bike so much that one day he wouldn't eat anything. He pleaded to me, "Papa, you'll buy me a tricycle won't you? Please, Papa, please!"

His mother lightly touched his shoulder and said, "We're sorry, Shin. You'll just have to learn to be patient. We all have to live without the things we want right now."

Shin was heartbroken, but he knew his mother was right

उस समय जापान में तीन पहियों वाली साइकिल का मिलना बहुत मुश्किल बात थी। १९४१ में, जापान ने अमरीका और कुछ अन्य देशों पर लड़ाई छेड़ी थी। चार साल के युद्ध के दौरान सारी साइकिलों, मंदिरों की घंटियों और रसोईघर के बर्तनों को गलाकर, उनसे लड़ाई के टैंक और बंदूकें बना दी गई थीं। बच्चों के खिलौनों का मिलना बहुत मुश्किल हो गया था।

परंतु शिन था कि बस साइकिल की रट लगाए था। साइकिल नहीं मिलने के गुस्से में उसने खाना ही नहीं खाया था। वो मेरे करीब आया और विनती करने लगा, 'पापा आप मेरे लिए साइकिल लाएंगे ना? जरूर लाना, भूलना नहीं!'

शिन की मां ने उसके कंधे पर हल्के से हाथ रखा और उससे कहा, 'शिन हमें माफ कर दो। तुम्हें धीरज रखना होगा। ऐसी कई चीजें हैं जिनकी हमें जरूरत है जो अभी हमें मिल नहीं रही हैं। हमें उनके बगैर काम चलाना होगा।'

शिन के दिल को यह बात अच्छी नहीं लगी। परंतु उसे पता था कि मां जो कह रही हैं वो ठीक है।



Then, one day, Shin's uncle, a sailor in the Japanese navy, came to visit.

"Shin," he called, "Come here. I have something for you."

"What is it? Shin asked with excitement, as he stared wide-eyed at the huge package in his uncle's arms.

"Take a guess," his uncle said, "It's something that you really-really want."

With that, his uncle hid the gift behind him. Shin was so excited he jumped around him to reach the package. But his uncle, laughing all the while, kept the mystery gift hidden.

Just then, Shin saw a little red handle poking through the wrapping. "It's a tricycle!" Shin shrieked, not believing what he saw.

फिर एक दिन शिन के चाचा उससे मिलने आए। चाचा, जापान की नौ-सेना में काम करते थे।

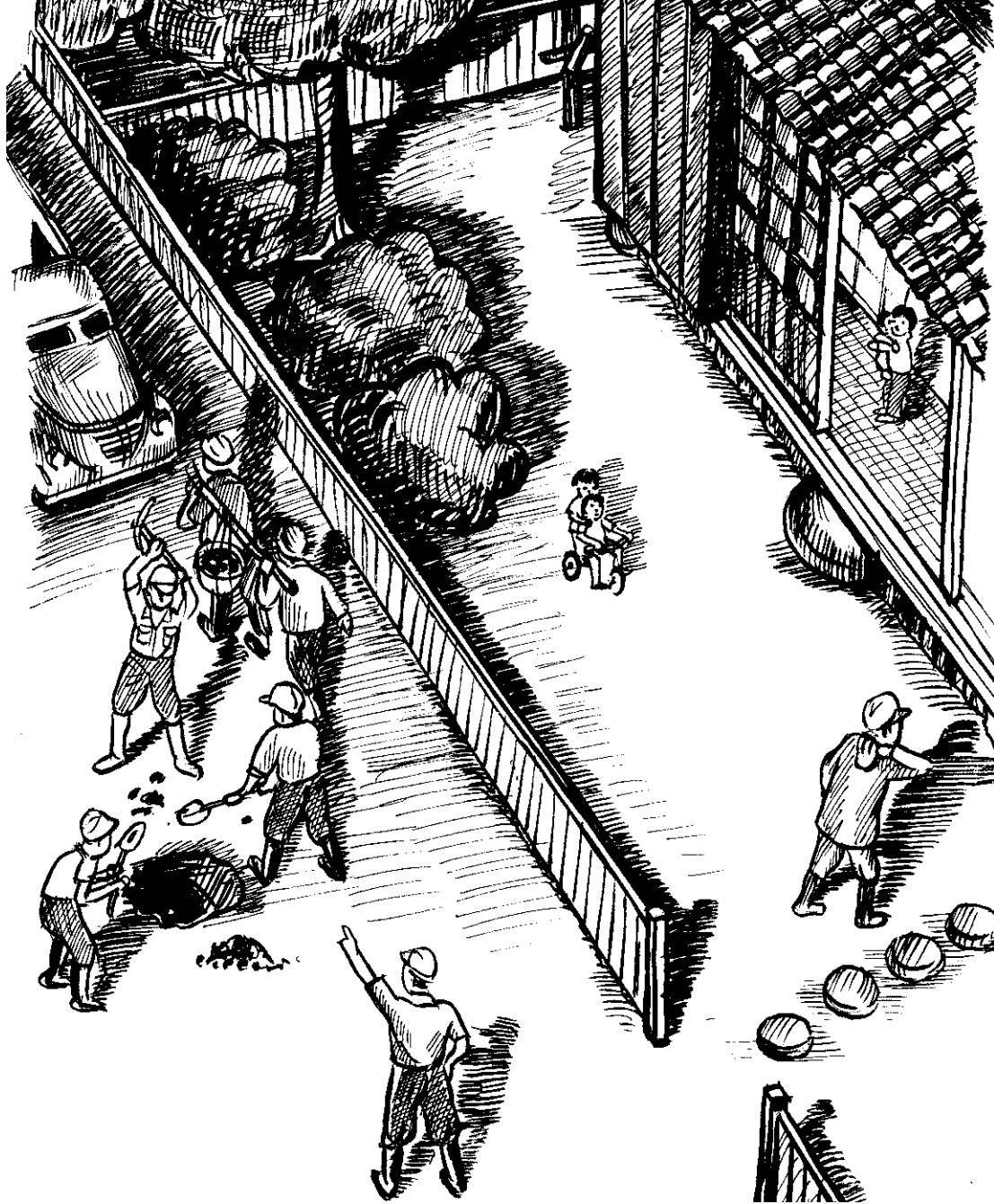
‘ शिन इधर आओ,’ उन्होंने कहा, ‘देखो मैं तुम्हारे लिए कुछ लाया हूँ।’

‘ क्या है?’ शिन ने उत्सुकतावश पूछा। वो बड़ी-बड़ी आंखों से चाचा के हाथ के पैकिट को निहार रहा था।

‘ तुम कुछ अंदाज लगाओ,’ चाचा ने कहा, ‘इसमें वो चीज है जिसे तुम बहुत-बहुत पाना चाहते हो।’

यह कहते ही चाचा ने उपहार को अपनी पीठ के पीछे छिपा लिया। शिन खुशी के मारे कूदने लगा और पैकिट को पकड़ने के लिए लपकने लगा। परंतु चाचा ने, हंसते हुए उपहार को शिन की पकड़ से दूर रखा।

तभी शिन को पैकिट में से बाहर निकलता हुआ एक लाल रंग का हैंडिल दिखाई दिया। ‘इसमें तीन पहियों वाली साइकिल है!’ वो जोर से चिल्लाया।



But as he tore away the rest of the wrapping his eyes filled with tears. "Oh thank you, Uncle. Thank you so much. Where did you get it?"

"I found it hidden in the back of my closet," his uncle said. "I'm shipping out before your birthday so I wanted to give it to you now."

Quickly Shin jumped on the bike, and looking proudly at me, said, "Look Papa, my dream has come true."

The morning of August 6, 1945, was a beautiful one. The air was filled with the sandpapery sounds of cicadas rubbing their legs together in the nearby trees.

उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। पैकिट खोलते वक्त उसकी आंखों में आंसू छलक उठे। 'चाचा, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपको यह साइकिल कहां से मिली?'

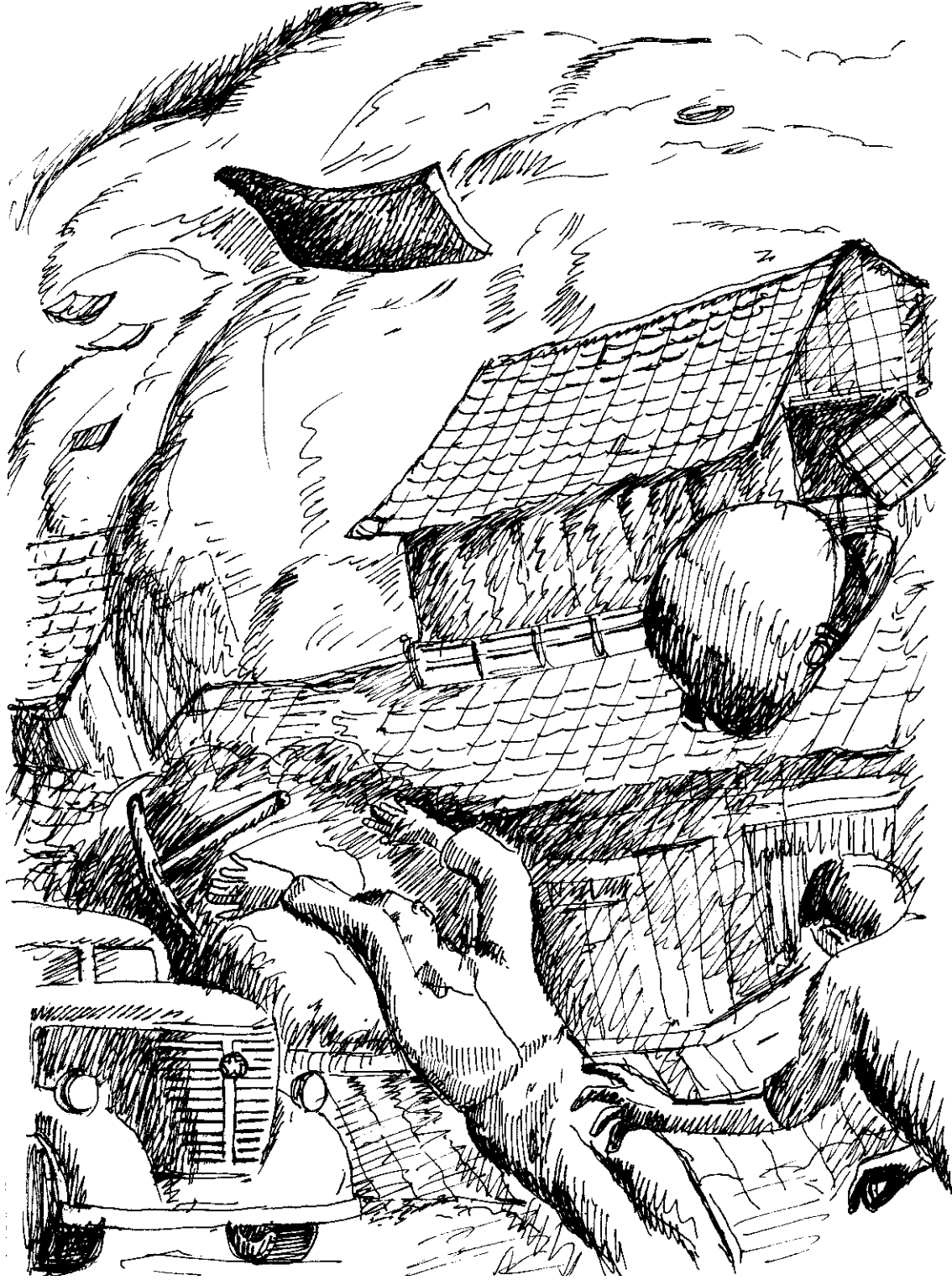
'यह साइकिल मुझे अपने कमरे में अलमारी में पड़ी मिली,' उन्होंने कहा, 'तुम्हारे जन्मदिन से पहले ही मुझे वापस जाना है, इसलिए मैंने सोचा यह उपहार तुम्हें पहले ही दे दूं।'

शिन कूद कर अपनी लाल साइकिल पर बैठ गया और गर्व से मेरी ओर देखकर कहने लगा, 'देखो पापा, मेरा सपना सच हो गया!'

६ अगस्त को सुबह बहुत सुंदर थी। पेड़ों से झींगुरों के पैरों के रगड़ने की आवाजें सुनाई पड़ रही हैं।

सुबह की शांति, सायरन की तेज गूँज से भंग हुई। यह अमरीकी हमलों की चेतावनी थी। सायरन की आवाज बंद होते ही, शिन और किमी दौड़ते हुए पीछे के आंगन में गए और हंसते हुए साइकिल पर सवार होकर उसे चलाने लगे।

मैं भी हंसते हुए घर के अंदर गया। तभी वो हुआ जिसकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी।



But the quiet of the morning was broken by another air-raid siren warning of an American bomb attack. When the siren stopped Shin and Kimi ran to the backyard, giggling as they jumped on the tricycle and rode around the yard.

A group of soldiers, repairing the road in front of our house, laughed as they watched the red tricycle speed by with Shin and Kimi beaming like lanterns. I too was laughing as I went back into our house to get ready for work. And then the unthinkable happened.

An explosion so terrible, a flash so blindingly bright. I thought the world had ended. Then, just a quickly, everything went black.

दिल को हिला देने वाला एक जोरदार धमाका हुआ और आंखों को चौंधिया देने वाली बिजली चमकी। मुझे तो लगा जैसे दुनिया का अंत हो गया हो। फिर अचानक, सुबह के समय आसमान में घोर अंधेरा छा गया।



When I woke up, darkness surrounded me and I couldn't move. I was trapped - but where?

Then I saw a faint light coming through a small hole above me. I began to move my hands, carefully, feeling the big wooded beams that were holding me down. I reached up and touched something smooth. It is the ceiling of our house! The whole house had collapsed on top to me.

Slowly I crawled towards the light and onto the roof. I stood looking into a hot, black wind. I couldn't believe my eyes. Nothing was left. No Kimi's house, no temple, no people, no Hiroshima.

जब मैं उठा तो मेरे चारों ओर घुप्प अंधेरा था। मेरा हिलना-डुलना भी मुश्किल था। ऐसा लगता था जैसे कि मैं कहीं फंस गया हूँ - पर कहाँ?

फिर मुझे ऊपर एक छेद में से हल्की सी रोशनी आती दिखाई पड़ी। मैंने सावधानी से अपने हाथों से लकड़ी की उन बल्लियों को हटाने की कोशिश की जिनके नीचे मैं दबा हुआ था। मैंने खड़े होकर किसी चिकनी सतह को छुआ। यह हमारे घर की छत थी। पूरा घर ढह कर मुझ पर आ गिरा था।

धीरे-धीरे मैं रोशनी की ओर बढ़ा और छत के ऊपर चढ़ा। चारों ओर बदन को झुलसाने वाली काली आंधी बह रही थी। यह सब देखकर पहले तो मुझे अपनी आंखों पर यकीन नहीं हुआ। सब कुछ ध्वस्त हो गया - कुछ भी नहीं बचा था। किमी का घर, मंदिर, लोग, यहां तक कि पूरा हिरोशिमा तबाह हो गया था।



I cried out into the wind, "Is anyone there?"

"Help!" I heard Mother scream, "Help me, Nobuo!"

I stumbled over our fallen house and found Mother digging in the rubble. There was Shin, pinned under a big beam.

Quickly I lifted the beam while Mother gently pulled Shin out. His face was bleeding and swollen. He was too weak to talk but his hand still held the red handlebar grip from his tricycle. Kimi was gone, lost somewhere under the house.

उस तेज आंधी में मैं जोर से चिल्लाया, 'क्या कोई है?'

'मदद करो,' शिन की मां की आवाज आई, 'नोबू, मेरी मदद करो।'

मैं टूटे हुए घर से बाहर निकला। वहां मैंने शिन की मां को घर के मलबे में कुछ खोदते हुए पाया। शिन वहां एक भारी लकड़ी की बल्ली के नीचे दबा हुआ था।

मैंने जल्दी से बल्ली को उठाया और मां ने दबे शिन को खींच कर बाहर निकाला। उसका चेहरा सूजा था और उसमें से खून बह रहा था। कमजोरी के कारण वो बोल नहीं पा रहा था। परंतु अभी भी उसने एक हाथ से अपनी तीन पहियों वाली साइकिल के हैंडिल को कस कर पकड़ा था। किमी का कोई नामोनिशां नहीं था। वो शायद, घर ने नीचे कहीं दबी पड़ी थी।



Then I spotted the edges of two little dresses trapped beneath the roof. Behind them, a wall of fire raced toward our house.

"Michiko! Yoko!" I screamed. I'm coming!"

With all my strength, I tried to lift the roof beams, but couldn't. The fire was very close now, and it was so hot I feared my clothes would start burning. Suddenly, the beams on top of Michiko and Yoko burst into flames.

"Michiko! Yoko!" I cried in horror. I was helpless to save my girls. There was nothing I could do. But Shin still had a chance, so Mother and I rushed him away from the raging fire to the river.

फिर मुझे छत के नीचे पड़े दो कपड़ों के टुकड़े दिखाई दिए। घर का एक कोना आग में दहक रहा था। आग की एक दीवार मेरे सामने खड़ी थी।

‘मिचिको! योको!’ मैं चिल्लाया, ‘मैं आ रहा हूँ।’

मैंने अपनी पूरी ताकत लगाकर छत की भारी बल्लियों को उठाने की कोशिश की, परंतु मैं इसमें असफल रहा। आग अब मेरे बहुत करीब आ चुकी थी। इतनी भयंकर गर्मी थी कि मेरे कपड़ों में आग लग सकती थी। तभी मिचिको और योको के ऊपर पड़ी लकड़ी की बल्ली से आग की लपटें उठने लगीं।

‘मिचिको! योको!’ मैं कांपते हुए चिल्लाया। मैं एकदम लाचार था - अपनी बच्चियों की जान बचाने में असमर्थ था। परंतु शिन के बचने की अभी भी उम्मीद थी। इसलिए मां, धधकती आग से बचने के लिए शिन को लेकर नदी की ओर दौड़ी।



All the survivors had gathered on the riverbank. It was a horrible sight. Everyone was burned, and they were crying moaning and screaming for water.

सभी बचे लोग नदी के किनारे ही इकट्ठे हुए थे। उस भयानक दृश्य को देख पाना भी मुश्किल था। सभी लोग बुरी तरह जल गए थे। वे बिलख-बिलख कर रो रहे थे और पानी मांग रहे थे।



"Water, I want water," pleaded Shin in a faint voice. I wanted to help him so much. But all around, people were dying when they drank water, so I didn't dare give him any.

"Papa," Shin whispered so quietly I could barely hear him, "My.....mytricycle___"

I squeezed his hand that still held the plastic grip. "Shin," I said, "You still have the handle in your hand."

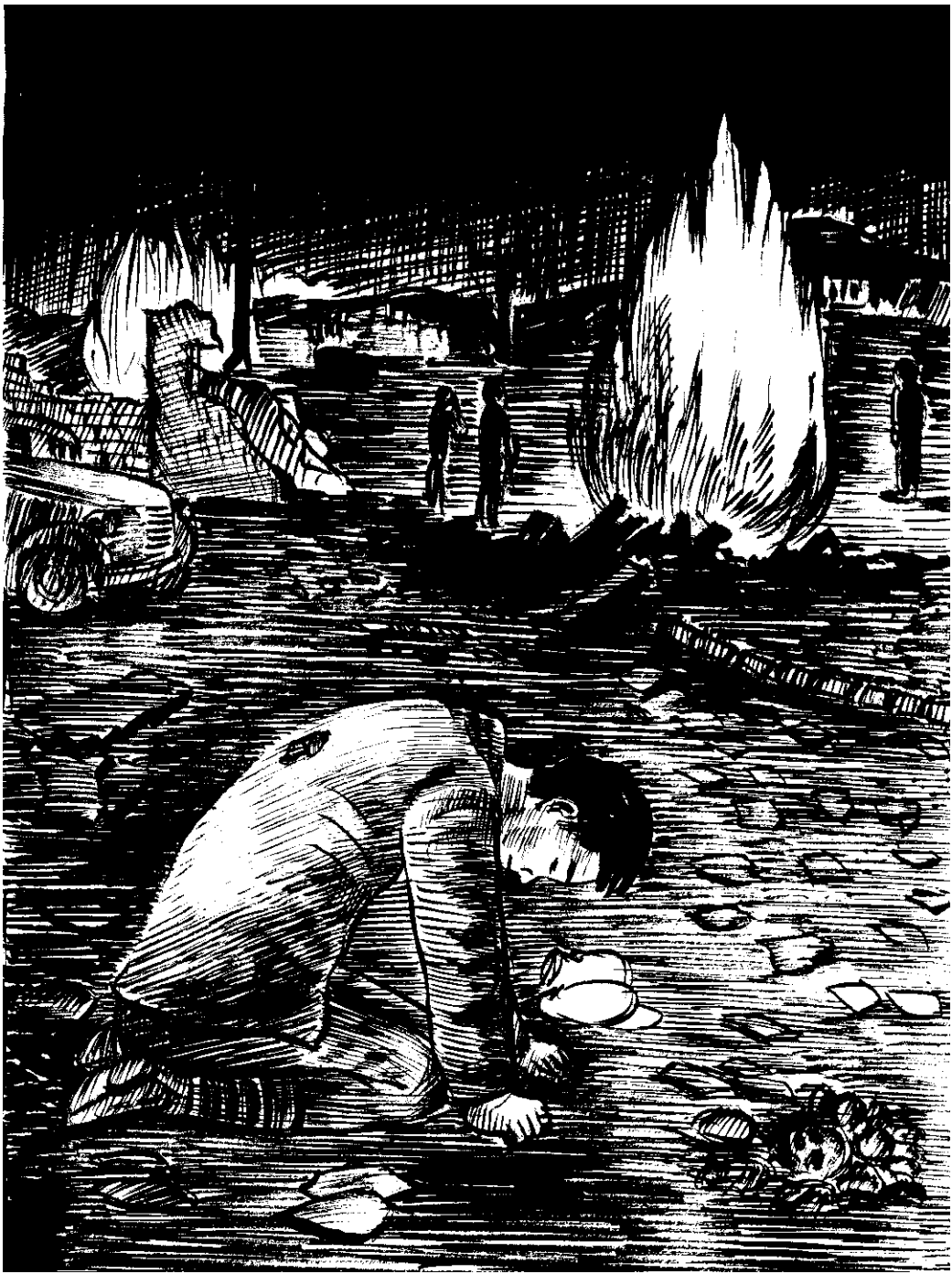
His swollen face seemed to brighten, and a little smile peeked through. But that night he died, ten days before his fourth birthday.

‘पानी मुझे पानी चाहिए!’ शिन हल्की आवाज में कह रहा था। मैं उसकी मदद करना चाहता था। परंतु मेरे आसपास लोग पानी पीकर मर रहे थे। इसलिए शिन को पानी देने की मेरी हिम्मत नहीं हुई।

‘पापा,’ शिन इतनी धीमी आवाज में फुसफुसा रहा था कि उसे सुन पाना भी मुश्किल था, ‘मेरी.... मेरी... साइकिल ...।’

मैंने उसकी हथेली को दबाया जिसमें वो अभी भी साइकिल के हैंडिल का प्लास्टिक कवर पकड़े था। ‘शिन,’ मैंने कहा, ‘तुम अभी भी साइकिल के हैंडिल को पकड़े हो।’

उसके सूजे चेहरे पर अचानक एक चमक आ गई और मुंह पर हल्की सी मुस्कराहट झलकने लगी। परंतु उसी रात को शिन चल बसा। दस दिनों बाद उसका चौथा जन्मदिन था।

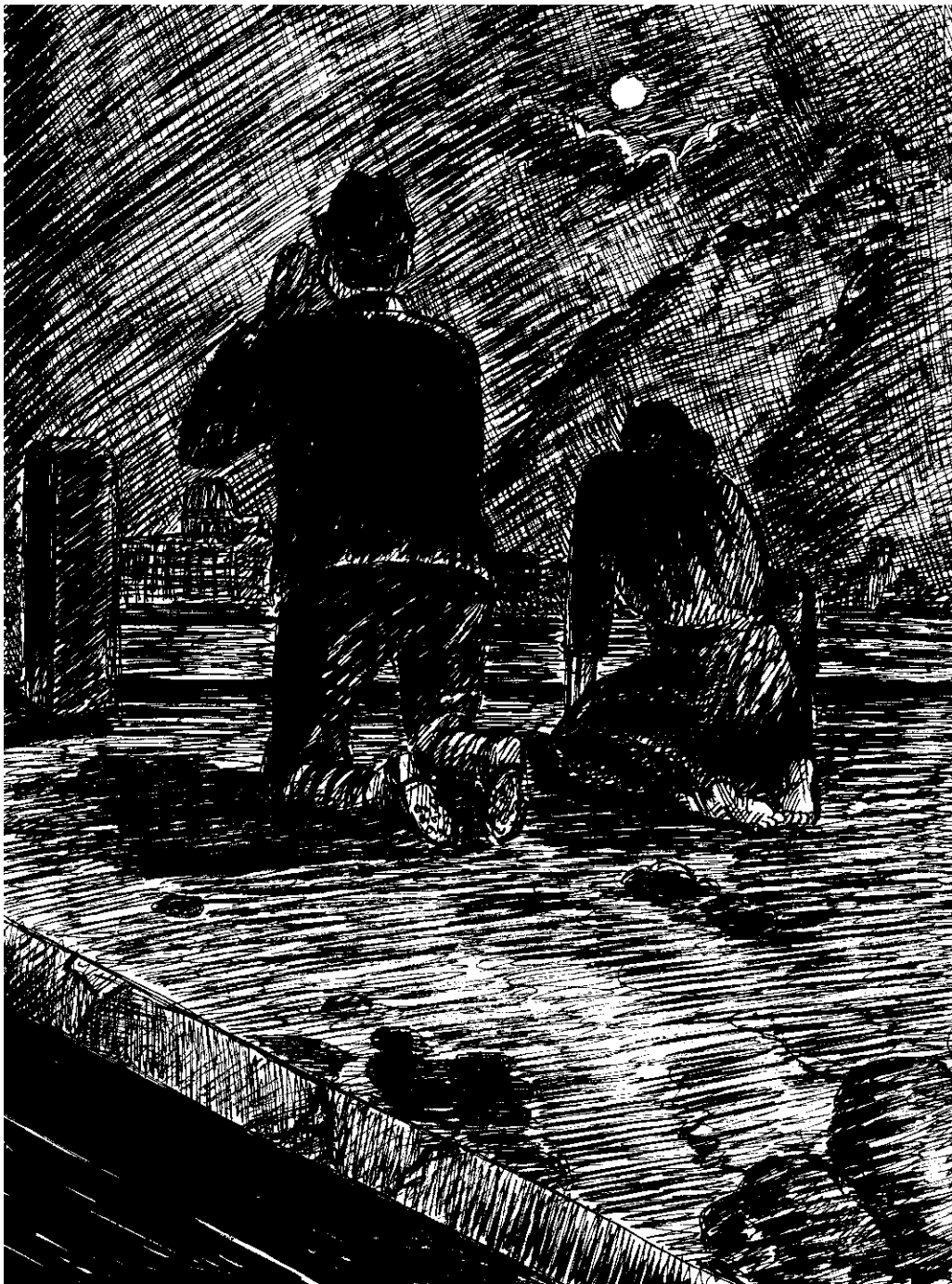


The next day, I went back to our house. There I found the little bones of Michiko and Yoko lying together. I burst into tears. "I'm sorry, my loves. Please forgive me."

After I buried them, I cried for a long time, remembering how happily they had been just the day before.

अगले दिन मैं अपने घर वापस गया। वहां मुझे मिचिको और योको की हड्डियां एक ही जगह पर पड़ी हुई मिलीं। उन्हें देखकर मैं सुबक-सुबक कर रोने लगा, 'मुझे माफ कर दो। मेरे प्यारे बच्चों मुझे माफ कर दो।'

उन्हें दफनाने के बाद मैं काफी देर तक रोता रहा। एक दिन पहले वे कितनी खुश थीं? मैं सोचने लगा।



The next evening I dug a grave in our backyard for Shin. But before I buried him, Kimi's mother arrived carrying Kimi's body. "They were such good friends," she said sadly. "We should bury them together, Nobuo."

So, Kimi and Shin were buried together holding hands, along with Shin's treasured tricycle, which we had found in the rubble.

Every evening after that we stood by the river and cried out our children's names, "Shin! Michiko! Yoko!"

अगले दिन घर के आंगन में शिन को दफनाने के लिए मैंने एक कब्र खोदी। परंतु उसी समय किमी के मृत शरीर को उसकी मां अपने हाथों से उठाकर लाई। 'ये दोनों इतने अच्छे दोस्त थे,' उन्होंने दुखी स्वर में कहा, 'नोबू, हम इन्हें इकट्ठे ही दफनाएंगे।'

जब किमी और शिन को दफनाया गया तो वे एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए थे। साथ में हमने शिन की लाल, तीन पहियों वाली साइकिल को भी दफनाया, जो हमें पास ही मलबे में पड़ी हुई मिली थी।

उस दिन के बाद हम रोजाना शाम को नदी के किनारे खड़े होकर अपने बच्चों का नाम पुकारते 'शिन! मिचिको! योको!'



Forty years passed after the atomic bomb turned Hiroshima into a desert, and there was new life all around the city. People had worried that nothing would ever grow again, but trees and grass sprouted everywhere. Children laughed and played in the parks.

I remembered the smiles of my own children, and my heart still ached with the memory.

उस ऍटम-बम ने हिरोशिमा को एक रेगिस्तान में बदल दिया। पर अब इस हादसे को गुजरे चालीस साल बीत गए हैं। इस बीच, शहर दुबारा आबाद हुआ है। अब यहां जीवन में एक नई उमंग है। शुरू में लोगों ने सोचा कि अब वहां मिट्टी में कभी भी कुछ पैदा नहीं होगा। परंतु अब जमीन पर सभी जगह घास है और पेड़ फूलों से लदे हैं। पार्क में हंसते और खेलते बच्चे हैं।

मुझे अभी भी अपने बच्चों की मुस्कराहट याद है। और यह स्मृति मेरे दिल को अभी भी दुखाती है।



For many years, Mother and I had been comforted by knowing our children were so close by. But we had always intended to give the children a proper burial in a cemetery. One day we decided the time had come to move them. We began digging in the backyard, and Kimi's mother joined us.

"Look Mother, it's the tricycle! I had forgotten it was here."

Before I knew it, I was crying. I had to turn away. I just couldn't look at it.

"Look Papa, there's something white," Mother said.

We all stared at the little white bones of Kimi and Shin, hand in hand as we had placed them.

बहुत सालों तक, मैं और मेरी पत्नी इस बात से आश्वासत थे कि बच्चे हमारे करीब ही हैं। परंतु हम चाहते थे कि उन्हें सही तरह से किसी कब्रिस्तान में जाकर दफनाएं। एक दिन हमने यह करने की सोची। किमी की मां ने भी इसमें हमारा हाथ बंटाय़ा।

कुछ मिनटों तक खोदने के बाद मुझे ऐसा लगने लगा जैसे मेरा फावड़ा किसी लोहे की चीज से जाकर टकराया हो। जब मैंने पास जाकर देखा तो मुझे वहां मिट्टी में एक जंग लगा पाइंप का टुकड़ा नजर आया।

‘देखो,’ मैंने अपनी पत्नी से कहा, ‘इस तीन पहियों वाली साइकिल को! इसके बारे में तो मैं भूल ही गया था।’

इससे पहले कि मुझे कुछ पता चले, मैं फूट-फूट कर रोने लगा। मैंने अपना मुंह मोड़ लिया। उस साइकिल को देखने की मुझ में हिम्मत नहीं हुई।

‘देखो, यहां कुछ सफेद हड्डियां जैसी दिखती हैं,’ मेरी पत्नी ने कहा।

हम लोग देर तक किमी और शिन की हड्डियों को घूरते रहे। दोनों, एक-दूसरे का हाथ थामे थे - बिल्कुल उसी तरह से जैसे हमने उन्हें दफनाया था।



Wars are always brutal. No matter who starts one. Innocent people die - even children like Shin.

With tears in my eyes, I gently lifted Shin's tricycle.

"This should never happen to children," I said. "Maybe if enough people could see Shin's tricycle, they would remember that the world should be a peaceful place where children can play and laugh."

The next day I took the tricycle to the Peace Museum in Hiroshima. Now Shin's story helps keep the dream of peace alive for children around the world.

end

युद्ध में हमेशा तबाही ही होती है। लड़ाई किसने शुरू की इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता है। लड़ाई में हमेशा निर्दोष लोग ही मरते हैं। - शिन जैसे बच्चे।

मेरी आंखें आंसुओं से भीगीं थीं। मैंने हिम्मत बटोर कर आहिस्ता से शिन की साइकिल को उठाया। ऐसा अत्याचार बच्चों के साथ दुबारा कभी न हो, मैंने कहा, 'अगर बहुत से लोग शिन की साइकिल को देखेंगे तो वे दुनिया में शांति के महत्व को समझेंगे। तब वे एक ऐसी दुनिया की कल्पना करेंगे जिसमें बच्चे हंस सकें और खेल सकें।

अगले दिन मैं शिन की साइकिल को हिराशिमा के 'शांति संग्रहालय' में ले गया। जिससे कि शिन की कहानी, दुनिया भर के बच्चों के लिए शांति का एक नया संदेश बन सके।

अंत